अभी नहीं तो कभी नहीं

महामारियों को खत्म करने के लिए

#एंडदएपिडेमिक

gfan global fund advocates network

जीफैन चेतावनी देता है!

बिना कार्रवाई के एचआईवी, टीबी और मलेरिया की महामारियां जारी रहेंगी और संभावित रूप से महामारी बनेगी

एचआईवी, टीबी और मलेरिया का खात्मा करना है
अभी नहीं तो कभी नहीं

ग्लोबल फंड एडवोकेट्स नेटवर्क – जुलाई 2018

विशिष्ट सारांश

ग्लोबल फंड टू फाइट एड्स, टीबी और मलेरिया को पूर्तयः वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए जीफैन विश्व भर से प्रयासों एवं आवाजों को एक साथ लाता है

इन तीनों महामारियों का अंत संभव है!
वरना ये एक एक चेतावनी है!
यदि इन तीनों महामारियों को समाप्त करने का विश्वस्तरीय लक्ष्य प्राप्त करना है तो अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सहायता में वृद्धि अत्यंत आवश्यक है!

विशिष्ट सारांश

2015 में सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स विश्व ने 2030 में एचआईवी, टीबी एवं मलेरिया को समाप्त करने का निर्णय लिया।

ये तीन संक्रमण पूरे विश्व में समय से पहले होने वाली मृत्यु और विकलांगता के मुख्य कारण बने हुए हैं। तीनों बीमारियों के खिलाफ अभियानों ने जीवनों को बचाया है एवं प्रत्येक देशों की स्वास्थ्य प्रणली की क्षमता विकसित करने में व्यापक योगदान दिया है। अंत में पूरी दुनिया से इन तीनों महामारियों को समाप्त करने के लिए एक बड़ा अभियान दुनिया को मानवीय, विकास, आर्थिक और सुरक्षा लाभ प्रदान कर सकता है।

यदि इन महामारियों को समाप्त करने के विश्वस्तरीय लक्ष्यों को प्राप्त करना है तो अंतर्राष्ट्रीय वित्त पोषण को बढ़ाए जाने की तत्काल आवश्यकता है।

तीनों महामारियों का अंत करना संभव है। इस क्षेत्र में लगातार प्रगति करने के लिए दुनिया में दवाएं, प्रमाणसूचित और प्रभावी हस्तक्षेप, और अन्य तकनीक हैं। मुख्यतः कम एवं मध्यम आय वाले देशों की सरकारों द्वारा अधिक निवेश से सभी स्वास्थ्य प्राथमिकताओं में कुल विश्व निवेश बढ़ रहा है। और, 2001 से, तीनों बीमारियों के खिलाफ सकारात्मक गति ने कुछ प्रमुख उपलब्धियां भी पायी हैं:

- 2016 के अंत तक जीवन की रक्षा करने वाले एचआईवी उपचार को 20.9 मिलियन लोगों को प्रदान किया गया था, जो वायरस से प्रभावित लोगों की आधी संख्या से भी बहुत कम थे, और पिछले दशक के दौरान हर साल नए संक्रमित लोगों की संख्या आधे से कम हो गई है।

- टीबी मामलों की वैश्विक दर सालाना 1.5% कम हो गई है, और 2002 से टीबी से संबंधित मौतों में 30% की कमी आई है, 50 मिलियन से अधिक लोगों की जानें बची हैं।

- वर्ष 2000 से दुनिया भर में मलेरिया की घटनाओं में 37% की कटौती देखी गई है और सालाना मलेरिया मृत्यु दर 60% कम हो गई है। इस प्रगति ने लगभग 7 मिलियन लोगों को बचाया है और उनमें से अधिकतर बच्चे और नवजात थे।

- ये सफलताएं उल्लेखनीय हैं, लेकिन संदेह है कि उन्हें अवश्यकतानुसार जारी रखा जा सकता है। इस रिपोर्ट में, ग्लोबल फंड एडवोकेट्स नेटवर्क (जीएफएएन) एक चेतावनी भेजता है:

नए आंकड़े बताते हैं कि इन तीनों महामारियों को समाप्त करने का विश्व का लक्ष्य पूरा नहीं हुआ है और वित्तीय सहायता की अभिप्रायपूर्ण अतिरिक्त किये वृद्धि किये बिना ऐसा कर पाना असंभव है।

हाल के आंकड़ों एवं प्रवृतियों का सारांश, चुनौतियों को रेखांकित करता है:

! समस्त विश्व में एचआईवी 15–49 आयु वर्ग की महिलाओं के बीच जल्दी होने वाली मृत्यु का अग्रिम कारण है एवं 15–49 आयु वर्ग के वयस्कों में 5 प्रतिशत से भी अधिक विकलांगता का कारण है। वर्तमान समय में 37.6 मिलियन व्यक्ति एचआईवी के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं एवं हर वर्ष 1.8 मिलियन नए व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित हो जाते हैं।

! टीबी विश्व की सबसे घातक संक्रामक बीमारी है जिसके प्रत्येक वर्ष 10 मिलियन से अधिक नए मामले सामने आते हैं एवं 1.8 मिलियन व्यक्तियों की मौत टीबी के कारण प्रत्येक वर्ष होती है। विश्व की जनसंख्या का एक चौथाई से अधिक हिस्सा टीबी से प्रच्छन रूप से संक्रमित है एवं उससे भी अधिक व्यक्ति संक्रमित एवं बीमारी के खतरे के शिकार हैं।

! मलेरिया ने 2016 में लगभग 216 मिलियन लोगों को संक्रमित किया, जिसमें 445,000 लोग मारे गए और जिसमें पांच वर्ष से कम उम्र के 285,000 बच्चे शामिल थे। मलेरिया बच्चों का एक बड़ा हत्यारा बना हुआ है जो हर दो मिनट में एक बच्चे की जान ले रहा है।

यह संक्रामक बीमारियां गतिशील हैं एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयासों में त्रुटि आने पर गतिशीलता से पुनर्जीवित होने के लिए तैयार हैं

खतरनाक संकेत यह कहते हैं कि तीनों ही बीमारियों के प्रति पिछले दशक के दौरान हुई प्रगति को खतरे में डालते हुए दुनिया की प्रतिक्रिया में कमी आई है जिसमें लोगों के जीवन अर्थव्यवस्थाओं, स्वास्थ्य सुरक्षा और टिकाऊ विकास को बहुत हद तक प्रभावित किया है।

किशोरियों एवं महिलाओं को सबसे ज्यादा ख़तरा इन तीनों बीमारियों से है, जैसे दुनिया के कम वर्ग वाले देशों के युवाओं की पीढ़ी।

महामारी से पीड़ित होने वाली आबादी पूरी तरह से स्वास्थ्य प्रणालियों द्वारा उपेक्षित की जा रही है और गहरी सामाजिक, कानूनी, और आर्थिक असमानता का विषय है जो खराब स्वास्थ्य में योगदान देती हैं।

समुदाय के नेतृत्व वाले और सामुदायिक–आधारित कार्यक्रमों को कम संसाधन दिए जाते हैं जबकि एचआईवी, टीबी और मलेरिया से प्रभावित समुदाय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और स्वास्थ्य का समर्थन करने में स्वास्थ्य जोखिमों के संरचनात्मक कारणों को संबोधित करने के लिए और स्वास्थ्य असमानताओं, स्वास्थ्य प्रणालियों और सरकारों को जिम्मेदार ठहराते हुए, और स्वास्थ्य प्रयासों की स्थिरता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कारक हैं।

कई देशों में सत्तावादी और कट्टर राजनीजिक ताकत कानून के नियमों और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान को कमज़ोर कर रहे हैं जो लोगों के अन्दर स्वास्थ्य देखभाल चाहने या अपनी सेहत और अधिकारों की वकालत करने की क्षमता में कमी लाती है।

सभी तीन महामारियों में दवाइयों के प्रति प्रतिरोध बढ़ रहा है और आगे के प्रतिरोध को रोकने के लिए कार्य – जैसे लक्षित स्वास्थ्य सेवाएं, समुदाय आधारित स्वास्थ्य सहायता का विस्तार, और नई दवाओं और इलाज पर्याप्त पैमाने पर नहीं किए जा रहे हैं।

कुछ प्रभावशाली स्वार्थी तत्वों के कारण दवाइयों और स्वास्थ्य तक लोगों की पहुंच नहीं हैं। कुछ दवा कंपनियां, लाभकारी क्षेत्र के हितों के लिए काम कर नहे राजनेता और व्यापार वार्ताकार अधिकतम मुनाफा कमाने के लिए और ट्रिप्स फ्लेक्सिबिलिटी के उपयोग को रोकने के लिए कदम उठा रहे हैं। ऐसे कार्य मरीजों और परिवारों द्वारा राष्ट्रीय बजट और आउट–ऑफ–पॉकेट खर्च की कीमत पर होते हैं, और कई मामलों में लोगों के लिए उपलब्ध किफायती दवाइयों और सार्वजनिक स्वास्थ्य की कीमत होता है।

दुनिया के सबसे धनी देशों से स्वास्थ्य के लिए अंतर्राष्ट्रीय विकास सहायता इन तीनों महामारियों के खिलाफ प्रतिक्रियाओं के लिए आवंटित सहायता के अपर्याप्त स्तर और कम और मध्यम आय वाले देशों से मिलने वाली बाहरी सहायता के वापस होने के कारण अपर्याप्त हो गयी है।

कमज़ोर स्वास्थ्य प्रणालियों; समुदाय आधारित प्रोग्रामिंग सहित उचित लक्षित कार्यक्रमों की कमी; और स्वास्थ्य के लिए संसाधनों को संगठित करने में घरेलू राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियों की वजह से कई कम और मध्यम आय वाले देश महामारी के खिलाफ पूरे पैमाने पर कार्यक्रमों को करने के लिए तैयार नहीं हैं।

जीफैन एक चेतावनी देता है!

बिना कोई कदम उठाए एचआईवी, टीबी और मलेरिया बनी रहेंगी और इनका पुनरूत्थान होगा

ग्लोबल फंड टू फाईट एड्स, ट्यूबरक्लोसिस एंड मलेरिया सहित विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), यूएनएड्स, स्टॉप टीबी पार्टनरशिप, और आरबीएम पार्टनरशिप टू एंड मलेरिया (जिसे पहले बैक मलेरिया के नाम से जाता था) सहित वैश्विक संस्थानों ने कई महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं।

लेकिन आंकड़े अब यह दिखाते हैं कि दुनिया 2020 के लिए निर्धारित उन वैश्विक लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पायेगी। वैश्विक रणनीतियां, समेकित विकास लक्ष्यों, और राजनीतिक नारों ने लागू देशों में सामने आगे वाली हकीकतों को अलग कर दिया है।

यदि विश्व तीनों महामारियों के खिलाफ़ वर्तमान दर से निवेश करता रहा और कार्यप्रणालियां बनाता रहा तो 2025 एवं 2030 के वैश्विक लक्ष्यों को हासिल करना असंभव है।

अंतर्राष्ट्रीय दाताओं द्वारा खत्म या कम हो रहे निवेश, अधिक क्षमता के माध्यम से प्रगति की धारणा और लागू देशों में घरेलू निवेश में वृद्धि के साथ, महामारी को नियंत्रित करने और समाप्त करने के अपने प्रयासों में विश्व भटक रहा है।

दुनिया के सामने इन तीनों महामारियों से हारने का डर है। अनियंत्रित और संभावित रूप से खराब महामारी से असंख्य जीवन प्रभावित होंगे, आर्थिक और मानव विकास कमज़ोर होंगे और इस धरती पर सभी के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा का खतरा होगा।

जीफैन एक वैश्विक स्वास्थ्य संगठन के रूप में इन तीनों महामारियों को समाप्त करने के लिए सख्त कदम उठाने की मांग करता है:

1. डोनर सरकारों और क्रियान्वयन वाले देशों को स्थिति की तत्काल और जोखिम को पहचानना चाहिए और बिना देरी किये संसाधनों को एकत्रित करना चाहिए। तकनीकी भागीदारों ने अनुमान लगाया है कि एड्स, टीबी और मलेरिया के सालाना 46 अरब अमेरिकी डॉलर के कुल वित्त पोषण की आवश्यकता है, जिसमें से जीफैन का अनुमान है कि छठी रीप्लेनिशमेंट (2020–2022) के लिए वैश्विक निधि के माध्यम से कम से कम 16.8 से 18 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश किया जाना चाहिए। यह पांचवें रीप्लेनिशमेंट (2017–2019) में 11.9 अरब अमेरिकी डॉलर की घोषित शपथों की तुलना में 22 प्रतिशत की न्यूनतम वृद्धि दर्शाएगा। इसके लिए डोनर सरकारों को जितना जल्दी हो सके एक ग्लोबल फंड की 2020–2022 की इमीनेंट रीप्लेनिशमेंट के लिए शपथ लेनी चाहिए।

2. नीति विशषज्ञों और निर्णयकर्ताओं को उन तरीकों को स्वीकारना चाहिए, स्पष्ट करना चाहिए एवं ध्यान आकर्षित करना चाहिए जिनमें एचआईवी, टीबी और मलेरिया के प्रयास अपना रास्ता भटक रहे हैं और तीनों महामारियों को समाप्त करने के लिए रणनीतियों का नवीनीकरण करना चाहिए।

3. ग्लोबल फंड को अपनी ऐतिहासिक सफलता और महामारियों को वित्तीय समर्थन देने की केंद्रीय भूमिका को ध्यान में रखते हुए 2020–2022 फंडिंग साईकल के लिए रीप्लेनिश्मेंट लक्ष्यों को स्थापित में महत्वाकांक्षी होने चाहिए और ये बताना चाहिए कि सही कदम न उठाये जाने पर क्या परिणाम हो सकते हैं।

4. वैश्विक निधि को महामारी की प्रतिक्रिया को वित्त पोषित करने में सफलता और केंद्रीय भूमिका के अपने रिकॉर्ड को देखते हुए 2020–2022 फंडिंग साइकिल के लिए रीप्लेनिश्मेंट लक्ष्यों को स्थापित करने में महत्वाकांक्षी होना चाहिए और निष्क्रियता की लागत को बताना चाहिए।

5. अधिवक्ताओं को एचआईवी, टीबी और मलेरिया के खिलाफ कार्यक्रमों सहित स्वास्थ्य के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता में निर्भीकता से मांग करनी चाहिए, और सरकारों पर सभी के लिए स्वास्थ्य और स्वास्थ्य प्रतिबद्धताओं के लिए नम्य और टिकाऊ स्वास्थ व्यवस्था बनाने के लिए दबाव डालना चाहिए।

ग्लोबल फंड की फडिंग बड़ाने के लिए अभिव्यक्तिता/वकालत:

ग्लोबल फंड टू फाईट एड्स, टीबी एंड मलेरिया अब तीन सालों 2020–2022 में अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए संसाधनों को इकठ्ठा करने के लिए एक निवेश मामला और छठी रीप्लेनिशमेंट प्रक्रिया विकसित कर रही है।

निवेश मामले और रिप्लेनिशमेंट प्रक्रिया को महामारी प्रतिक्रिया लक्ष्यों और डब्ल्यूएचओ, यूएनएड्स, स्टॉप टीबी पार्टनरशिप, और आरबीएम पार्टनरशिप टू एंड मलेरिया द्वारा किए गए निवेश के लिए आवश्यक गणनाओं के द्वारा सूचित किया जाएगा। ग्लोबल फंड वर्ष 2018 के अंत में या 2019 की शुरूआत में अपने निवेश मामले और रीप्लेनिशमेंट प्रक्रिया को लॉन्च करने की उम्मीद करता है।

अपनी हालिया पांचवी रीप्लेनिशमेंट में, जिसने वर्ष 2017–2019 के शपथ ली थी, ग्लोबल फंड लगभग $13 बिलियन की डोनर प्रतिबद्धताओं को सुनिश्चित कर सका। यह काफी महत्वपूर्ण राशि थी लेकिन तकनीकी भागीदारी द्वारा निर्धारित पूर्ण निवेश आवश्यकता के केवल एक ही हिस्से के बराबर ही है।

अभिव्यक्ताओं को ग्लोबल फंड और सभी अंतर्राष्ट्रीय वित्त पोषण संस्थाओं को तीनों महामारियों को समाप्त करने के लिए प्रोग्रामिंग और निवेश के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

India HIV/AIDS Alliance

gfan ASIA - PACIFIC

Translated by India HIV/AIDS Alliance and Global Fund Advocates Network Asia-Pacific

आइये अपनी आवाज़ जोड़ें! अब कदम उठाने का समय है!